Bihar Board Class 12 English Notes Chapter 7 A Child Is Born

GERMAINE GREER (b. 1939), born and educated in Australia, is a famous feminist writer. In her well known works The Female Eunuch (1970), Sex and Destiny: The Politics of Human Fertility (1984) and The Change (1991), she explores the social and cultural aspects of life of women.

जर्मेन ग्रीर (जन्म 1939), ऑस्ट्रेलिया में जन्म और शिक्षित, एक प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका हैं। अपनी प्रसिद्ध कृतियों द फीमेल यूनुच (1970), सेक्स एंड डेस्टिनी: द पॉलिटिक्स ऑफ ह्यूमन फर्टिलिटी (1984) और द चेंज (1991) में, वह महिलाओं के जीवन के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं की पड़ताल करती हैं।

She believes that socio cultural practices are designed to suit male interest; at the same time they further subjugate women. The present piece 'A Child is Born' is an extract form her book Sex and Destiny: The Politics of Human Fertility.

उनका मानना है कि सामाजिक सांस्कृतिक प्रथाओं को पुरुष हित के अनुरूप बनाया गया है; साथ ही वे महिलाओं को और अधिक अपने अधीन कर लेते हैं। वर्तमान कृति 'ए चाइल्ड इज बॉर्न' उनकी पुस्तक सेक्स एंड डेस्टिनी: द पॉलिटिक्स ऑफ ह्यूमन फर्टिलिटी का एक उद्धरण है।

It explores the cultural peculiarities of the East and the West regarding child-birth and parent-child relationship.

यह बच्चे के जन्म और माता-पिता-बाल संबंधों के संबंध में पूर्व और पश्चिम की सांस्कृतिक विशिष्टताओं की पड़ताल करता है।

A CHILD IS BORN

Paragraph 1 The ways of managing childbirth in traditional societies are many and varied; their usefulness stems directly from the fact that they are accepted culturally and collectively so that the mother does not have the psychic burden of reinventing the procedures. Even though the potential catastrophes are alive in the memory of her community and the index of anxiety high, a ritual approach to pregnancy which hems the pregnant woman about with taboos and prohibitions helps make the anxiety manageable. A woman who observes all the prohibitions and carries out all the rites will be actively involved in holding the unknown at bay. She will have other reinforcements, for many of the ritual observances of pregnancy involve the participation of others who should support her, primarily her husband, then her kinsfolk and then the other members of her community. Some of these behaviours will be sensible and useful, others magical, but they will all increase her sense of security and her conviction that she is conducting the pregnancy, not that it is conducting her. The remnants of this kind of prophylaxis can be found in the persistence of old wives' tales about pregnancy

even in our own superrational and confused lifestyle. One university graduate of my acquaintance who approached her pregnancy as if it were her term assignment, meticulously footnoting every development, clung to her pre-natal exercises as a form of ritual observance as well as a helpful preparation for the physical exploit of childbirth, performing them in deep silence and total recollection at the same time every day come hell or high water. As well, she observed the old diehard superstition that acquiring equipment and apparel for baby before the birth was bad luck, and so one of my godchildren shot into the world without crib or napkins. Considerable effort had gone into seeing that the mother had every opportunity to enjoy her baby, but, after her training for unmedicated childbirth for months, in the event the hospital refused to believe she was in second stage labour until her daughter's head had appeared... The hospital staff was so uncooperative about breast-feeding that mother and daughter discharged themselves after two days.

पारंपरिक समाजों में प्रसव के प्रबंधन के तरीके कई और विविध हैं; उनकी उपयोगिता सीधे इस तथ्य से उपजी है कि उन्हें सांस्कृतिक और सामूहिक रूप से स्वीकार किया जाता है ताकि मां पर प्रक्रियाओं को फिर से शुरू करने का मानसिक बोझ न हो। भले ही संभावित आपदाएं उसके समुदाय की स्मृति में जीवित हैं और चिंता का सूचकांक उच्च है, गर्भावस्था के लिए एक अनुष्ठान दृष्टिकोण जो गर्भवती महिला को वर्जनाओं और निषेधों के बारे में बताता है, चिंता को प्रबंधनीय बनाने में मदद करता है। एक महिला जो सभी निषेधों का पालन करती है और सभी संस्कारों को पूरा करती है, वह अज्ञात को खाड़ी में रखने में सक्रिय रूप से शामिल होगी। उसके पास अन्य सुदृढीकरण होंगे, क्योंकि गर्भावस्था के कई अनुष्ठानों में अन्य लोगों की भागीदारी शामिल होती है, जिन्हें उसका समर्थन करना चाहिए, मुख्य रूप से उसके पति, फिर उसके रिश्तेदारों और फिर उसके समुदाय के अन्य सदस्यों को। इनमें से कुछ व्यवहार समझदार और उपयोगी होंगे, अन्य जादुई होंगे, लेकिन वे सभी उसकी सुरक्षा की भावना और उसके विश्वास को बढ़ाएंगे कि वह गर्भावस्था का संचालन कर रही है, न कि यह उसका संचालन कर रही है। इस तरह के प्रोफिलैक्सिस के अवशेष गर्भावस्था के बारे में पुरानी पत्नियों की कहानियों की दृढ़ता में पाए जा सकते हैं, यहां तक कि हमारी अपनी अतिशयोक्तिपूर्ण और भ्रमित जीवन शैली में भी। मेरे परिचित की एक विश्वविद्यालय की स्नातक, जिसने अपनी गर्भावस्था के बारे में इस तरह से संपर्क किया जैसे कि यह उसका कार्यकाल था, हर विकास को सावधानीपूर्वक फुटनोट करते हुए, अपने प्रसव पूर्व अभ्यास के रूप में अनुष्ठान के पालन के साथ-साथ बच्चे के जन्म के शारीरिक शोषण के लिए एक सहायक तैयारी के रूप में प्रदर्शन किया। उन्हें एक ही समय में एक ही समय में गहरी चुप्पी और कुल स्मरण में हर दिन नरक या उच्च पानी आता है। साथ ही, उसने पुराने कट्टर अंधविश्वास को देखा कि जन्म से पहले बच्चे के लिए उपकरण और परिधान प्राप्त करना दुर्भाग्य था, और इसलिए मेरे एक पोते ने पालना या नैपकिन के बिना दुनिया में गोली मार दी। यह देखने के लिए काफी प्रयास किया गया था कि माँ के पास अपने बच्चे का आनंद लेने का हर अवसर था, लेकिन, महीनों तक बिना दवा के प्रसव के प्रशिक्षण के बाद, अस्पताल ने यह मानने से इनकार कर दिया कि जब तक उसकी बेटी का सिर दिखाई नहीं देता, तब तक वह दूसरे चरण के श्रम में थी। स्तनपान के मामले में अस्पताल के कर्मचारी इतने असहयोगी थे कि मां और बेटी ने दो दिन बाद खुद को छुट्टी दे दी।

Paragraph 2 This birth was virtually unattended. In non-technocratic societies, except for remarkable accidents, birth is always attended.

यह जन्म वस्तुतः अप्राप्य था। गैर-तकनीकी समाजों में, उल्लेखनीय दुर्घटनाओं को छोड़कर, जन्म हमेशा उपस्थित होता है।

https://www.evidyarthi.in/

Paragraph 3 Clearly infant and mother mortality is greater in traditional births, but in our anxiety to avoid death we may have destroyed the significance of the experience for the vast majority who live.

No one would deny that each infant and particularly every maternal death is a tragedy to be prevented if at all possible, nor that modern obstetric care, which has developed in the hospital setting, has been at least partly responsible for the dramatic decrease in both maternal and pre-natal mortality over the past half century. But it is not necessarily perverse to question whether our present priority should be to reach minimum figures for perinatal mortality at any price when this includes giving up things which free human beings have often felt to be more important than their own survival – such as freedom to live their own lives their own way and to make individual choices in line with their own sense of values. (Kitzinger, Sheila, and John A Davies (eds) The Place of Birth (London 1978) p.v)

स्पष्ट रूप से पारंपरिक जन्मों में शिशु और मातृ मृत्यु दर अधिक है, लेकिन मृत्यु से बचने की हमारी चिंता में हमने रहने वाले विशाल बहुमत के अनुभव के महत्व को नष्ट कर दिया है।

कोई भी इस बात से इनकार नहीं करेगा कि प्रत्येक शिशु और विशेष रूप से प्रत्येक मातृ मृत्यु को यदि संभव हो तो रोका जा सकता है, और न ही आधुनिक प्रसूति देखभाल, जो कि अस्पताल की स्थापना में विकसित हुई है, मातृ दोनों में नाटकीय कमी के लिए कम से कम आंशिक रूप से जिम्मेदार है। और पिछली आधी सदी में प्रसव पूर्व मृत्यु दर। लेकिन यह प्रश्न करने के लिए जरूरी नहीं है कि क्या हमारी वर्तमान प्राथमिकता किसी भी कीमत पर प्रसवकालीन मृत्यु दर के न्यूनतम आंकड़ों तक पहुंचने की होनी चाहिए, जब इसमें उन चीजों को छोड़ना शामिल है, जिन्हें स्वतंत्र मनुष्य अक्सर अपने अस्तित्व से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं – जैसे कि स्वतंत्रता अपने जीवन को अपने तरीके से जीते हैं और मूल्यों की अपनी समझ के अनुरूप व्यक्तिगत चुनाव करते हैं। (किट्ज़िंगर, शीला, और जॉन ए डेविस (संस्करण) जन्म स्थान (लंदन 1978) p.v)

Paragraph 4. In many societies women still go forth from their mother's houses at marriage to live with a mother-in-law and the wives of their husbands' brothers. It is a truism of anthropology that such women do not become members of their new family until they have bore a child. If we consider that in such societies the marriage was quite likely to have been arranged, it is understandable that the bride too longs for the child who will stand in the same intimate relationship to her as she with her own mother. The western interpretation of such mores is that they are backward, cruel and wrong; it is assumed that the sexual relations between the spouses are perfunctory and exploitative and that all mothers-in law are unjust and vindictive. One of the greatest difficulties in the way of feminists who are not chauvinistic and want to learn from women who still live within a female society is the tendency of those women to withdraw into silent opposition when participating in international fora conducted in languages which they cannot speak with fluency; women officials of the Sudanese government told me that they had given up going to international conferences, even though the trips were a tremendous treat, because they were tired of being told about their own lives instead of being consulted.

कई समाजों में महिलाएं अभी भी अपनी सास और अपने पति के भाइयों की पत्नियों के साथ रहने के लिए शादी के समय अपनी मां के घर से निकल जाती हैं। यह मानव विज्ञान का एक सत्य है कि ऐसी महिलाएं अपने नए परिवार की सदस्य नहीं बनती हैं जब तक कि वे एक बच्चा पैदा नहीं कर लेतीं। यदि हम मानते हैं कि ऐसे समाजों में विवाह की व्यवस्था होने की काफी संभावना थी, तो यह समझ में आता है कि दुल्हन को उस बच्चे की बहुत लालसा होती है जो उसके साथ उसी तरह के अंतरंग संबंध में खड़ा होगा जैसे वह अपनी माँ के साथ। ऐसे रीति-रिवाजों की पश्चिमी व्याख्या यह है कि वे पिछड़े, क्रूर और गलत हैं; यह माना जाता है कि पति-पत्नी के बीच यौन संबंध बेकार और शोषक हैं और सभी सास अन्यायपूर्ण और प्रतिशोधी हैं। नारीवादियों के रास्ते में सबसे बड़ी कठिनाइयों में से एक है, जो अराजक नहीं हैं और उन महिलाओं से सीखना चाहती हैं जो अभी भी एक महिला समाज के भीतर रहती हैं, उन महिलाओं की उन भाषाओं में आयोजित अंतरराष्ट्रीय मंचों में भाग लेने पर मौन विरोध में वापस लेने की प्रवृत्ति है, जिन्हें वे बोल नहीं सकते। प्रवाह के साथ; सूडानी सरकार की महिला अधिकारियों ने मुझे बताया कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में जाना छोड़ दिया था, भले ही यात्राएं एक जबरदस्त दावत थीं, क्योंकि वे परामर्श के बजाय अपने स्वयं के जीवन के बारे में बताए जाने से थक गई थीं।

Paragraph 5 Thus we in the West would regard it as outrageous that a woman could lose her own name and become known as the mother of her first-born, once she has borne it although of course most of us do not protest against the sinking of the woman's lineage under her husband's name at marriage. In many traditional societies the relationship between mother and child is more important than the relationship between husband and wife: in some, indeed, the child's relationship with the rest of his family is as important or even more important than either.

....a number of social usages may stress the child's relationship with the rest of his kin-group at the expense of that with his parents. His aunts and uncles may be permitted greater physical intimacy with him in public than his parents. In many traditional societies in Africa and India the biological family is deliberately weakened, by enforced abstinence or actual separation of parents, in order to strengthen the extended family – thus children are not born at the whim of the parents, but in response to a broader pressure from the whole group. (Caldwell, J,C., "The Economic Rationality of High Fertility: An Investigation Illustrated with Nigerian Survey Data", Population Studies, vol. 31, No. 1 (1976) p. 5-6)

इस प्रकार हम पश्चिम में इसे अपमानजनक मानेंगे कि एक महिला अपना नाम खो सकती है और अपने पहले बच्चे की मां के रूप में जानी जा सकती है, एक बार जब वह इसे जन्म लेती है, हालांकि निश्चित रूप से हम में से अधिकांश महिला के डूबने का विरोध नहीं करते हैं शादी में अपने पति के नाम के तहत वंश। कई पारंपरिक समाजों में मां और बच्चे के बीच का रिश्ता पति और पत्नी के बीच के रिश्ते से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है: कुछ में, वास्तव में, बच्चे का अपने परिवार के बाकी सदस्यों के साथ संबंध उतना ही महत्वपूर्ण या उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। ....कई सामाजिक प्रथाएं बच्चे के अपने माता-पिता के साथ उसकी कीमत पर उसके बाकी परिजनों के साथ संबंधों पर जोर दे सकती हैं। उसकी मौसी और चाचाओं को उनके माता-पिता की तुलना में सार्वजनिक रूप से उनके साथ अधिक शारीरिक अंतरंगता की अनुमति दी जा सकती है। अफ्रीका और भारत में कई पारंपरिक समाजों में, विस्तारित परिवार को मजबूत करने के लिए, लागू किए गए संयम या माता-पिता के वास्तविक अलगाव से जैविक परिवार को जानबूझकर कमजोर किया जाता है – इस प्रकार बच्चे माता-पिता की

https://www.evidyarthi.in/

इच्छा पर पैदा नहीं होते हैं, बल्कि एक व्यापक प्रतिक्रिया के जवाब में होते हैं। पूरे समूह का दबाव। (कैल्डवेल, जे, सी।, "उच्च प्रजनन क्षमता की आर्थिक तर्कसंगतता: नाइजीरियाई सर्वेक्षण डेटा के साथ एक जांच इलस्ट्रेटेड", जनसंख्या अध्ययन, वॉल्यूम 31, नंबर 1 (1 9 76) पी। 5-6)

Paragraph 6. The woman who satisfies the longings of her peers by producing the child they are all anxious to see, finds her achievement celebrated in ways that dramatise her success. Among the few first-person accounts of how this works in practice is this one from a young Sylheti woman:

If a girl is lucky, and her parents are alive, she goes to her mother's house for the last few moŕths of her pregnancy and about the first three months of the baby's life. There she gets a lot of love and care. She is asked, "What would you like to eat? What do you fancy?" All the time she is looked after. The whole matter of pregnancy is one of celebration. When the baby is born it is an occasion of joy for the whole family. The naming ceremony is lovely. It is held when the boy is seven days old. A new dress is brought for it and a new sari for the mother. There is feasting and singing until late at nighi: The women and girls gather and sing songs. Garlands of turmeric and garlic are worn to ward off evil spirits. That's when the name is chosen ... The ceremony is held for the birth of a boy or a girl. Of course it is considered better to have a boy, but the birth of a girl is celebrated with the same joy by the women in the family. We sit together eating pan and singing. Some of us might be young unmarried girls, others aged ladies of forty or fifty. There are so many jokes, so much laughter.

People look so funny eating pan and singing. The men don't take much part. They may come and have a look at the baby, but the singing, the gathering together at night – it is all women. The songs are simple songs which are rarely written down. They are about the lives of women in Bengal. (Wilson, Amrit, Finding a Voice : Asian Women in Britain (London, 1978) p. 22)

वह महिला जो बच्चे पैदा करके अपने साथियों की लालसा को संतुष्ट करती है, वे सभी इसे देखने के लिए उत्सुक हैं, उसकी उपलब्धि को इस तरह से मनाया जाता है कि उसकी सफलता का नाटक किया जाता है। व्यवहार में यह कैसे काम करता है, इसके कुछ प्रथम-व्यक्ति खातों में से यह एक युवा सिलहेती महिला से है: यदि कोई लड़की भाग्यशाली है, और उसके माता-पिता जीवित हैं, तो वह अपनी गर्भावस्था के आखिरी कुछ महीनों और बच्चे के जीवन के पहले तीन महीनों के लिए अपनी मां के घर जाती है। वहां उसे बहुत प्यार और देखभाल मिलती है। उससे पूछा जाता है, "आप क्या खाना पसंद करेंगी? आपको क्या पसंद है?" हर समय उसकी देखभाल की जाती है। गर्भावस्था का पूरा मामला उत्सव का होता है। जब बच्चा पैदा होता है तो यह पूरे परिवार के लिए खुशी का अवसर होता है। नामकरण संस्कार प्यारा होता है। यह तब होता है जब लड़का सात दिन का होता है उसके लिए नया पहनावा लाया जाता है और माँ के लिए नई साड़ी। देर रात तक दावत और गायन होता है: महिलाएं और लड़कियां इकट्ठा होती हैं और गीत गाती हैं। हल्दी और लहसुन की माला बुरी आत्माओं को दूर करने के लिए पहनी जाती है। तभी नाम चुना जाता है ... लड़के या लड़की के जन्म के लिए समारोह आयोजित किया जाता है। बेशक लड़का होना बेहतर माना जाता है, लेकिन लड़की का जन्म परिवार में महिलाओं द्वारा उसी खुशी के साथ मनाया जाता है हम एक साथ पान खाते और गाते हुए बैठते हैं। हम में से कुछ अविवाहित युवा लड़कियां हो सकती हैं, अन्य चालीस या पचास की उम्र की महिलाएं हो सकती हैं। बहुत सारे चुटकुले हैं, कितनी हंसी है। लोग पान खाकर और गाते हुए कितने फनी लगते हैं। पुरुष ज्यादा हिस्सा नहीं लेते हैं। वे आ सकते हैं और बच्चे को देख

सकते हैं, लेकिन गायन, रात में एक साथ सभा – यह सब महिलाएं हैं। गीत सरल गीत होते हैं जिन्हें शायद ही कभी लिखा जाता है। वे बंगाल में महिलाओं के जीवन के बारे में हैं। (विल्सन, अमृत, फाइंडिंग ए वॉयस: एशियन वूमेन इन ब्रिटेन (लंदन, 1978) पृष्ठ 22)

Paragraph 7 Among the rewards of pregnancy in this case, as in many others, is that the woman gets to go home to visit her mother and sisters; the nostalgic tone of the description, which is clearly tinged with rose, may be the product of the contrast that this young woman finds in England. Another of the Asian women who found a voice in Amrit Wilson's book gives a similarly-rosy picture of rearing a child in Bangladesh:

In Bangladesh children under the age of five or six are looked after by the whole family. All the children of the joint family are looked after together. They are taken to the pond for a bath perhaps by one daughter-in-law, and she bathes them all. Then they all come in and sit down to eat. Perhaps the youngest daughter-in-law has cooked the meal. Another woman feeds them. As for playing the children play out of doors with natural objects. Here people say that Asian children don't play with toys. In Bangladesh they don't need toys. They make their own simple things ... In the afternoon they love to hear Rupthoka (fairy tales). Maybe there is a favourite aunt, she tells them these stories. But at night when they get sleepy they always go to their mothers and sleep in their embrace. But other women do help a lot, in fact, they have such strong relationships with the child that it is not uncommon for them to be called Big Mother or Small Mother.

....(Wilson, Amrit, Finding a Voice : Asian Women in Britain (London, 1978) p. 25)

इस मामले में गर्भावस्था के पुरस्कारों में, जैसा कि कई अन्य मामलों में है, महिला को अपनी मां और बहनों से मिलने के लिए घर जाना पड़ता है; विवरण का उदासीन स्वर, जो स्पष्ट रूप से गुलाब से रंगा हुआ है, इस युवती के इंग्लैंड में पाए जाने वाले विपरीत का उत्पाद हो सकता है। अमृत विल्सन की किताब में आवाज पाने वाली एशियाई महिलाओं में से एक बांग्लादेश में एक बच्चे के पालन-पोषण की इसी तरह की गुलाबी तस्वीर देती है: बांग्लादेश में पांच या छह साल से कम उम्र के बच्चों की देखभाल पूरे परिवार द्वारा की जाती है। संयुक्त परिवार के सभी बच्चों की देखभाल एक साथ की जाती है। शायद एक बहू उन्हें तालाब में नहाने के लिए ले जाती है, और वह उन सभी को नहलाती है। फिर वे सब अंदर आकर भोजन करने बैठ गए। शायद सबसे छोटी बहू ने खाना बनाया है। एक और महिला उन्हें खिलाती है। जहां तक खेलने की बात है तो बच्चे दरवाजे के बाहर प्राकृतिक वस्तुओं से खेलते हैं। यहां लोग कहते हैं कि एशियाई बच्चे खिलौनों से नहीं खेलते। बांग्लादेश में उन्हें खिलौनों की जरूरत नहीं है। वे अपनी साधारण चीजें खुद बनाते हैं ... दोपहर में वे रूपथोका (परियों की कहानियां) सुनना पसंद करते हैं। शायद कोई पसंदीदा चाची है, वह उन्हें ये कहानियाँ सुनाती है। लेकिन रात में जब उन्हें नींद आती है तो वे हमेशा अपनी मां के पास जाते हैं और उनके आलिंगन में सो जाते हैं। लेकिन अन्य महिलाएं बहुत मदद करती हैं, वास्तव में, बच्चे के साथ उनके इतने मजबूत संबंध होते हैं कि उनके लिए बड़ी माँ या छोटी माँ कहलाना असामान्य नहीं है। ....(विल्सन, अमृत, फाइंडिंग ए वॉयस: एशियन वूमेन इन ब्रिटेन (लंदन, 1978) पृष्ठ 25)

Paragraph 8 All technological change causes social problems; the impact of Western medicine in traditional societies is one of the most problematic areas of modernization. The prestige of the white-coats is enormous, the respect for their miraculous hypodermics total.

https://www.evidyarthi.in/

The pressure of expectation makes for aggressive and dramatic procedures even when the health status of the patients is too poor to withstand them. Allopathic doctors in peasant communities are dependent upon expensive drugs, sparkling equipment and lots of electricity, most of which they have not got in sufficient quantity. Where foreign aid has established that temple of our religion, the hospital, it must make a ritual display of its power with horrible results: Sheila Kitzinger visited an enormous modern hospital for "Bantu patients' in South Africa, and this is what she saw:

The delivery ward was full of groaning, whirling women – the majority labouring alone. Oxytocin drips and pumps were in widespread use. This was the meeting-place of the old Africa and the new technology of the West. Pools of blood lay on the floor like sacrificial out-pourings, and Bantu nurses were happy to leave them there as a witness of the blessings of the earth, while they busied themselves with technologically sophisticated modern equipment and ignored the labouring women as far as possible, which it was not so difficult to do as they did not speak the same languages anyway... Birth was very far from normai here and it was conducted in such a way that I had seen before in American hospitals catering for black "clinic'patients from large urban ghettos: impersonal conveyor-belt obstetrics accompanied by a plethora of technical innovations and machinery. (Kitzinger, Women as Mothers. P. 109).

सभी तकनीकी परिवर्तन सामाजिक समस्याओं का कारण बनते हैं; पारंपरिक समाजों में पश्चिमी चिकित्सा का प्रभाव आधुनिकीकरण के सबसे समस्याग्रस्त क्षेत्रों में से एक है। सफेद कोट की प्रतिष्ठा बहुत बड़ी है, उनके चमत्कारी हाइपोडर्मिक के लिए कुल सम्मान। अपेक्षा का दबाव आक्रामक और नाटकीय प्रक्रियाओं के लिए बनाता है, तब भी जब रोगियों की स्वास्थ्य स्थिति इतनी खराब होती है कि उनका सामना नहीं किया जा सकता है। किसान समुदायों में एलोपैथिक डॉक्टर महंगी दवाओं, स्पार्कलिंग उपकरण और बहुत सारी बिजली पर निर्भर हैं, जिनमें से अधिकांश को पर्याप्त मात्रा में नहीं मिला है। जहां विदेशी सहायता ने हमारे धर्म के उस मंदिर, अस्पताल को स्थापित किया है, उसे भयानक परिणामों के साथ अपनी शक्ति का एक अनुष्ठान प्रदर्शन करना चाहिए: शीला किट्जिंगर ने दक्षिण अफ्रीका में "बंटू रोगियों" के लिए एक विशाल आधुनिक अस्पताल का दौरा किया, और उसने यही देखा: डिलीवरी वार्ड कराहती, चक्करदार महिलाओं से भरा था – अकेले श्रम करने वाली बहुसंख्यक। ऑक्सीटोसिन ड्रिप और पंप व्यापक रूप से उपयोग में थे। यह पुराने अफ्रीका और पश्चिम की नई तकनीक का मिलन-स्थल था। खून के कुंड फर्श पर पड़े थे, जैसे बलि का छींटा, और बंटू नर्सें उन्हें पृथ्वी के आशीर्वाद के साक्षी के रूप में वहां छोड़कर खुश थीं, जबकि उन्होंने तकनीकी रूप से परिष्कृत आधुनिक उपकरणों के साथ खुद को व्यस्त कर लिया और जहां तक संभव हो श्रमिक महिलाओं की उपेक्षा की , जो करना इतना मुश्किल नहीं था क्योंकि वे वैसे भी एक ही भाषा नहीं बोलते थे ... जन्म यहां नॉर्मई से बहुत दूर था और इसे इस तरह से आयोजित किया गया था कि मैंने पहले अमेरिकी अस्पतालों में काले "क्लिनिक" के लिए खानपान देखा था। बड़े शहरी यहूदी बस्ती के रोगी: अवैयक्तिक कन्वेयर-बेल्ट प्रसूति तकनीकी नवाचारों और मशीनरी के ढेर के साथ। (किट्ज़िंगर, माताओं के रूप में महिलाएं। पी। 109)।

Paragraph 9. If we turn birth from a climactic personal experience into a personal disaster, it matters little that the result is more likely to be a live child. Women will not long continue to offer up their bodies and minds to such brutality, especially if there is no one at home to welcome the child, to praise the mother for her courage and to help her raise it. In fact

peasant communities are more levelheaded and sceptical of us and our methods than we realise and they have resisted the intrusion of our chromium plated technology more successfully than we like to think. They know that death attends too frequently in the traditional birthplace, but they also know that there are worse fates than death. Nevertheless, all that stops our technology from reaching into every hut and hovel is poverty: the cultural hegemony of Western technology is total.

Paragraph 10 The voices of a few women raised in warning cannot be heard over the humming and throbbing of our machines, which is probably just as well, for if we succeed in crushing all pride and dignity out of child bearing, the population explosion will take care of itself.

यदि हम एक चरम व्यक्तिगत अनुभव से जन्म को एक व्यक्तिगत आपदा में बदल देते हैं, तो यह बहुत कम मायने रखता है कि परिणाम एक जीवित बच्चा होने की अधिक संभावना है। महिलाएं लंबे समय तक इस तरह की क्रूरता के लिए अपने शरीर और दिमाग को अर्पण करना जारी नहीं रखेगी, खासकर अगर घर पर बच्चे का स्वागत करने के लिए, माँ के साहस की प्रशंसा करने और उसे पालने में मदद करने के लिए कोई नहीं है। वास्तव में किसान समुदाय हमारे और हमारे तरीकों के बारे में हमारे विचार से अधिक स्तर पर और संदेहजनक हैं और उन्होंने हमारी क्रोमियम प्लेटेड तकनीक की घुसपैठ का जितना हम सोचते हैं उससे कहीं अधिक सफलतापूर्वक विरोध किया है। वे जानते हैं कि पारंपरिक जन्मस्थान में मृत्यु बहुत बार होती है, लेकिन वे यह भी जानते हैं कि मृत्यु से भी बदतर भाग्य होते हैं। फिर भी, वह सब जो हमारी तकनीक को हर झोपड़ी और झोपड़ी तक पहुँचने से रोकता है, वह है गरीबी: पश्चिमी तकनीक का सांस्कृतिक आधिपत्य कुल है। पैराग्राफ 10 चेतावनी में उठाई गई कुछ महिलाओं की आवाजें हमारी मशीनों की गड़गड़ाहट और धड़कन पर नहीं सुनी जा सकतीं, जो शायद ठीक भी है, क्योंकि अगर हम बच्चे पैदा करने से सभी गर्व और गरिमा को कुचलने में सफल होते हैं, तो जनसंख्या विस्फोट होगा खुद की देखभाल।

https://www.evidyarthi.in/